OM-7- 2021 FINAL FILE_Page 1 and 2 09/06/2021 10:08 AM Page 8

आने वाला कल

व्यक्ति आज खूब परिश्रम करता है, किसलिए? इसलिए ना, मेरा आने वाला कल अच्छा हो, सुखदायक हो, सम्पन्नता से भरा हुआ हो। अच्छी बात है परिश्रम करना चाहिए, आने वाले कल को अच्छा बनाना चाहिए। सम्पन्न और सुखदायक बनाना भी चाहिए। परन्तु जिस आने वाले कल को आप ने आज अच्छा बनाया, जब वह कल आ जाएगा, तब उस अच्छा बनाए गए कल का सुख तो लेना चाहिए!

तो आज का दिन वह दिन है, जिसको आपने कल मेहनत करके अच्छा बनाया था।

मान लेते हैं, आज का दिन, आपके परिश्रम से अच्छा बनाया गया दिन है, आज के अच्छे दिन का आनंद लेंवे। यदि आप आज के दिन का आनंद लेते हैं, तो आपकी कल की, की गई मेहनत सफल है। परंतु यदि आप आज फिर उसी चिंता में पड़ जाते हैं कि मेरा आने वाला कल अच्छा हो, आप आज के दिन का आनंद नहीं लेते, तो कल आपकी की गई सारी मेहनत व्यर्थ हो गई, ऐसा माना जाएगा।

इस प्रकार से तो आप आने वाले कल को अच्छा बनाने के लिए प्रतिदिन सिर्फ मेहनत ही करते रह जाएंगे, और उस अच्छे दिन का आनंद कभी भी नहीं ले पाएंगे। यह सारी सोच और सारा परिश्रम व्यर्थ होगा।

तो भाइयों! कल के अच्छे बनाए हुए दिन का, आज का आनंद लें। भले ही आने वाले कल को अच्छा बनाने के लिए भी कुछ समय लगाएं, उसका निषेध नहीं है। परंतु सारी शक्ति और समय इसी में न लगा दें, कुछ आज के दिन का आनंद भी लेंवे। तभी आपका सारा परिश्रम सफल और जीवन सार्थक होगा।

परमात्म ऊर्जा

फुल स्टॉप...!!

आप किसी भी कर्म में बहुत बिज़ी हो, मन-बुद्धि, कर्म के सम्बन्ध में लगी हुई है, बन्धन में नहीं। लेकिन सम्बन्ध में डायरेक्शन मिले-फुल स्टॉप, तो फुल स्टॉप लगा सकते हो कि कर्म के संकल्प चलते रहेंगे? यह करना है, यह नहीं करना है, ये ऐसे है, यह ऐसे है...। तो यह प्रैक्टिस एक सेकण्ड के लिये भी करो लेकिन अभ्यास करते जाओ, क्योंकि अन्तिम सर्टीफिकेट एक सेकण्ड के फुल स्टॉप लगाने पर ही मिलना है। सेकण्ड में विस्तार को समा लें, सार स्वरूप बन जायें।

ऐसे नहीं, योग में बैठेंगे तो फुल स्टॉप लगेगा। हलचल में फुल स्टॉप, इतनी पॉवरफुल ब्रेक है? या फिर ब्रेक लगायेंगे यहाँ और ठहरेगी वहाँ! और समय पर फुल स्टॉप लगे, समय बीत जाने के बाद फुल स्टॉप लगाया तो उससे कोई फायदा नहीं। सोचा और हुआ। सोचते ही नहीं रहो कि मैं शरीर नहीं आत्मा हूँ, आत्मा हूँ, मेरे को फुल स्टॉप लगाना है और कुछ नहीं सोचना है, ये सोचते भी टाइम लग जायेगा। ये सेकण्ड का फुल स्टॉप नहीं हुआ। ये अभ्यास स्वयं ही करो।

ये अभ्यास सारे दिन में जब भी चांस मिले करते रहो। एक सेकण्ड में कुछ बिगड़ता नहीं है। फिर काम करना शुरू कर दो। लेकिन हलचल में फुल स्टॉप लगता है या नहीं - ये चेक करो। अगर कर्म के बन्धन में आते हैं तो कर्म आपको खींचेगा, फुल स्टॉप नहीं लगाने देगा। और न्यारे-प्यारे होकर किसी भी कर्म सम्बन्ध में हो तो सेकण्ड में फुल स्टॉप लगेगा। क्योंकि बन्धन नहीं है। बन्धन भी खींचता है और सम्बन्ध भी खींचता है लेकिन न्यारे होकर सम्बन्ध में आना यह - अन्डरलाइन करना। इसी अभ्यास वाले ही पास विद् ऑनर होंगे।

फरिश्तेपन की ड्रेस चमकीली ड्रेस है। यह स्मृति और स्वरूप बनना अर्थात् फरिश्ता ड्रेस धारण करना। यह फरिश्ता ड्रेस अर्थात् फरिश्ता स्वरूप दूर-दूर तक आत्माओं को आकर्षित करेगा। इसलिए शरीर के भान के मिट्टी की ड्रेस से न्यारे बन चमकीली ड्रेस पहनो, सफलता का सितारा बनो।

कथा सरिता

कहाँ छिप जायें

मैंने सुना है कि जब सृष्टि बनी और ईश्वर ने सारी चीज़ें बनाईं, बड़ी अद्भुत कहानी है। और जब उसने आदमी बनाया, तो वह अपने देवताओं से पूछने लगा कि यह आदमी मुझे बड़ा शिकायती मालूम पड़ता है। यह बन तो गया, लेकिन यह छोटी-छोटी शिकायतें लेकर मेरे द्वार पर खड़ा हो जाएगा। मैंने वृक्ष बनाए, वृक्ष कभी शिकायत लेकर नहीं आए और न ही कोई प्रार्थना की। मैंने पशु बनाए, पशु कभी मेरे द्वार पर नहीं आए। पक्षी बनाए, पक्षी भी कभी मेरे द्वार पर नहीं आए। चांद-तारे बनाए, सब बनाया। लेकिन यह आदमी मुसीबत का घर है। यह सुबह-शाम चौबीस घंटे द्वार पर दस्तक देगा, कहेगा कि यह करो, यह करो; यह होना चाहिए, वह नहीं होना चाहिए। इस आदमी से बचने का मुझे कोई उपाय चाहिए। मैं कहाँ छिप जाऊं?

किसी देवता ने कहा हिमालय पर छिप जाइए। तो उसने कहा, तुम्हें पता नहीं है, बहुत जल्द वह वक्त आएगा कि हिलेरी और तेनजिंग हिमालय पर चढ़ जाएंगे। तो किसी ने कहा, पैसिफिक महासागर में छिप जाइए। उसने कहा, वह भी कुछ काम नहीं चलेगा। जल्दी ही अमेरिकी वैज्ञानिक वहाँ भी उतर जाएंगे।

किसी ने कहा, चांद-तारों पर बैठ जाइए। तो उसने कहा, उससे भी कुछ होने वाला नहीं है। ज़रा ही समय बीतेगा और चांद-तारों पर आदमी पहुंच जाएगा।

तब एक बूढ़े देवता ने उसके कान में कहा, एक ही रास्ता है, आप आदमी के भीतर छिप जाइए। वहाँ आदमी कभी नहीं जाएगा। और ईश्वर ने बात मान ली और आदमी के भीतर छिप गया। और आदमी हिमालय पर भी पहुंच गया, चांद-तारों पर भी पहुंच गया, पैसिफिक में भी पहुंच गया। एक जगह भर छूट गई है जहाँ आदमी नहीं पहुंच पाया, वह है खुद के भीतर।

संगत का प्रभाव

एक राजा का तोता मर गया। उन्होंने कहा-मंत्रिवर! हमारा पिंजरा सूना हो गया। इसमें पालने के लिए एक तोता लाओ। तोते सदैव तो मिलते नहीं। राजा पीछे पड़ गये तो मंत्री एक संत के पास गये और कहा-भगवन्! राजा साहब एक तोता लाने की ज़िद्द कर रहे हैं। आप अपना तोता दे दें तो बड़ी कृपा होगी। संत ने कहा-ठीक है, ले जाओ।

राजा ने सोने के पिंजरे में बड़े स्नेह से तोते की सुख-सुविधा का प्रबंध किया। ब्रह्ममुहूर्त में तोता बोलने लगा-ॐ तत्सत् ॐ तत्सत् उठो राजा! उठो महारानी! दुर्लभ मानव-तन मिला है। यह सोने के लिए नहीं, भजन करने के लिए मिला है।

चित्रकूट के घाट पर भई संतन की भीर।
तुलसीदास चंदन घिसै तिलक देत रघुबीर।।

कभी रामायण की चौपाई तो कभी गीता के श्लोक उसके मुँह से निकलें। पूरा राजपरिवार सवेरे उठकर उसकी बातें सुना करता था। राजा कहते थे कि सुग्गा क्या मिला, एक संत मिल गये।

हर जीव की एक निश्चित आयु होती है। एक दिन वह सुग्गा मर गया। राजा-रानी, राजपरिवार और पूरे राष्ट्र ने हफ्तों शोक मनाया। झण्डा झुका दिया गया। किसी प्रकार राजपरिवार ने शोक संवरण किया और राजकाज में लग गये। पुनः राजा साहब ने कहा-मंत्रिवर! खाली पिंजरा सूना-सूना लगता है, एक तोते की व्यवस्था हो जाती तो! अब कसाई वाला तोता राजा के पिंजरे में पहुँच गया। राजपरिवार बहुत प्रसन्न हुआ। सबको लगा कि वही तोता जीवित होकर चला आया है। दोनों की नासिका, पंख, आकार, चितवन सब एक जैसे थे। लेकिन सवेरे तोता उसी प्रकार राजा को बुलाने लगा जैसे वह कसाई अपने नौकरों को उठाता था कि उठ! हरामी के बच्चे! राजा बन बैठा है। मेरे लिए ला अण्डे, नहीं तो पड़ेंगे डण्डे!

राजा को इतना क्रोध आया कि उसने तोते को पिंजरे से निकाला और गर्दन मरोड़कर किले से बाहर फेंक दिया।

दोनों सुग्गे सगे भाई थे। एक की गर्दन मरोड़ दी गयी, तो दूसरे के लिए झण्डे झुक गये, भण्डारा किया गया, शोक मनाया गया। आखिर भूल कहाँ हो गयी? अन्तर था तो संगति का! सत्संग की कमी थी।

न जाने किस रूप में नारायण मिल जायें

हरिहर एक सीधा-साधा किसान था। वह दिन भर खेतों में मेहनत से काम करता और शाम को प्रभु का गुणगान करता। उसके मन की एक ही चाह थी। वह उडुपि के श्री कृष्ण के दर्शन करना चाहता था। उडुपि दक्षिण कन्नड़ जिले का प्रमुख तीर्थ था। प्रतिवर्ष जब तीर्थ यात्री वहाँ जाने को तैयार होते तो हरिहर का मन भी मचल जाता किंतु धन की कमी के कारण उसका जाना न हो पाता।

इसी तरह कुछ वर्ष बीत गए। हरिहर ने कुछ पैसे जमा कर लिये। घर से निकलते समय उसकी पत्नी ने बहुत-सा खाने का सामान बाँध दिया। उन दिनों यातायात के साधनों का अभाव था। तीर्थ यात्री पैदल ही जाया करते।

रास्ते में हरिहर की भेंट एक बूढ़े व्यक्ति से हुई। बुढ़े के कपड़े फटे-पुराने थे और पाँव में जूते तक न थे। अन्य तीर्थ यात्री उससे कतराकर निकल गए। किन्तु हरिहर से न रहा गया। उसने बूढ़े से पूछा 'बाबा, क्या आप भी उडुपि जा रहे हैं?"

बूढ़े की आँखों में आँसू आ गए। उसने रूंधे स्वर में उत्तर दिया, "मैं भला तीर्थ कैसे कर सकता हूँ? एक बच्चा बीमार है और दूसरे बेटे ने तीन दिन से कुछ नहीं खाया।"

हरिहर भला व्यक्ति था। उसका मन पसीज गया। उसने निश्चय किया कि वह उडुपि जाने से पहले बूढ़े के घर जायेगा। घर पहुँचते ही हरिहर ने सबको भोजन खिलाया, बीमार को दवा दी। बूढ़े के खेत, बीजों के अभाव में खाली पड़े थे। लौटते-लौटते हरिहर ने उसे बीजों के लिए भी धन दे दिया। जब वह उडुपि जाने लगा तो उसने पाया कि धन खत्म हो गया था। वह चुपचाप अपने घर लौट आया। उसके मन में तीर्थ यात्रा न करने का कोई दुःख न था। बल्कि उसे खुशी थी कि उसने किसी का भला किया है।

हरिहर की पत्नी भी उसके इस कार्य से प्रसन्न थी। रात को हरिहर ने सपने में भगवान श्री कृष्ण को देखा। उन्होंने उसे आशीर्वाद दिया और कहा- हरिहर, तुम सच्चे भक्त हो। जो व्यक्ति मेरे ही बनाए मनुष्य से प्रेम नहीं करता, वह मेरा भक्त कदापि नहीं हो सकता।

तुमने उस बूढ़े की सहायता की और रास्ते से ही लौट आए। उस बूढ़े व्यक्ति के वेष में मैं ही था। अनेक तीर्थ यात्री मेरी उपेक्षा करते हुए आगे बढ़ गए, एक तुमने ही मेरी विनती सुनी।

मैं सदा तुम्हारे साथ रहूँगा। अपने स्वभाव से दया, करूणा और प्रेम का त्याग मत करना। हरिहर को तीर्थ यात्रा का फल मिल गया था।